P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-II*October-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

चित्रा मुद्गल की कथा–साहित्य में नारी

शारदा शर्मा
अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
के० बी० महिला महाविद्यालय,
हजारीबाग, झारखण्ड

सारांश

हिन्दी साहित्य में चित्र मुद्गल एक सशक्त हस्ताक्षर है, आधुनिक कथा साहित्य में नारी को शीर्ष पर देखने वाली लेखिका चित्रा मुद्गल की कहानियाँ गम्भीर एवं भावपूर्ण होती है। इनका कहना है कि महिलाएँ जब अपने बारे में लिखती है तब बड़े ही स्वाभाविक ढंग से लिखती हैं जबकि पुरुष साहित्यकार नारियों रहस्य एवं जिज्ञासा का पात्र बना देते हैं। प्रस्तुत आलेख में चित्रा मुद्गल ने युवा पीढ़ी की मानसिकता, मॉडलिंग तथा फैशन परस्त नयी संस्कृति की ओर प्रकाश डाला हैं। चित्रा जी ने अपने साहित्य में जिन नारी चरित्रों का उद्घाटन किया है उसमें आधुनिक युग में शिक्षा, नौकरी और जीवन मूल्यों में आये बदलाव है।

मुख्य शब्द : चित्रा मुद्गल का साहित्य, चित्रा मुद्गल की नारी, नारी मुक्ति या स्त्री–विमर्श।

प्रस्तावना

हिन्दी के शीर्षस्थ–कहानीकारों में चित्रा मुद्गल का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। इनके साहित्य में विशेषकर भारतीय परिवारों खासकर महिलाओं की मनःस्थिति उनकी भावनाएँ संयुक्त एवं एकल परिवारों में इनकी स्थितियाँ आदि की कथा व्यथा को शिद्दत से महसूस किया जा सकता है। स्त्री की मानसिकता, उसके स्वप्न आकांक्षाएँ खुशियाँ दुःख तफलीफों तथा सीमाओं का भावात्मक अंकन चित्रा मुद्गल की विशेषता रही है। महिला रचनाकारों की अनुभव सीमित दुनिया पर अक्सर आलोचना करते हुए कहा जाता है कि महिला पारिवारिक जीवन या स्त्री–पुरुष सम्बन्ध के अपने सुरक्षित क्षेत्र में राहत महसूस करती है, पर चित्राजी के कथा लेखन पर नज़र डालने पर पता चलता है कि उन्होंने पारिवारिक जीवन अथवा स्त्री–पुरुष सम्बन्धों के अलावा अनेक सामाजिक आर्थिक राजनीतिक संदर्भों की कथा रचनाएँ की हैं। उनकी रचनाधर्मिता का क्षेत्र और उसे देखने का दायरा विस्तृत है। कई पुरुष कथाकारों को अपनी सर्जनात्मक काविलियत से शिकस्त करने की क्षमता चित्राजी में हैं उनकी रचनाएँ महज परिवार या नारी जीवन पर केन्द्रित नहीं है। चित्राजी में अपनी पुस्तक समकालिन महिला लेखन में लिखती है कि "महिलाएँ अपने बारे में स्वाभाविक रूप से लिखती है, जबकि पुरुष साहित्यकारों के लिए भी अनेक रूपों वाली नारी रहस्य और.....। और जिज्ञासा का कारण रही है इसलिए कवियों एवं लेखकों ने अन्य विषयों के अतिरिक्त अपने लेखन के द्वारा सशक्त नारी पात्रों के माध्यम से प्रखर नारी चेतना की अभिव्यक्ति की है। आचार्य हज़ारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार, यह विचित्र बात है कि स्त्री जब साहित्य लिखती है, तब भी स्त्रियों के बारे में ही लिखती है और पुरुष जब साहित्य लिखता है तब भी स्त्रियों के सम्बन्ध में लिखता है। दोनों का अन्तर यह होता है कि स्त्री के लिखने का उद्देश्य है अपने विषय में फैले हुए भ्रम का निराकरण और पुरुष का उद्देश्य है उसके विषय में और भी भ्रम पैदा करना।" चित्राजी ने स्पष्ट किया है कि महिलाओं के बारे में महिला साहित्यकारों एवं पुरुष साहित्यकारों द्वारा पर्याप्त लेखन हुआ है, परंतु महिला लेखन के अन्तर्गत हम महिलाओं द्वारा महिला के बारे में लिखे गए साहित्य को शामिल करते हैं और पुरुष साहित्यकारों द्वारा लिखे गए महिला पर लेखन को शामिल नहीं करते, क्योंकि महिलाओं द्वारा रचित साहित्य को ही प्रामाणिकता व विश्वसनीयता प्राप्त है। स्त्री नियति से जुड़े जीवन–यथार्थ को सिर्फ वही भोगती है। अतः इस स्वानुभूत सच्चाई की अभिव्यक्ति में विश्सनीयता विद्यमान हैं।"[1] चित्राजी की रचनाओं के अध्ययन करने पर यह महसूस होता है कि उनकी यह बात सौ प्रतिशत सही है। चित्राजी ने अपने उपन्यासों एवं कहानियों में जिन नारी पात्रों की प्रस्तुति की है। वे पूर्णतया अपने आस पास के जीवन में विद्यमान है। समकालीन साहित्य में कई लेखिकाओं ने नारी जीवन से जुड़ी स्थूल एवं सूक्ष्म समस्याओं को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखने–परखने का

प्रयास किया है। नारी होने के नाते उन्होंने नारी सुलभ उदात्त चरित्र और मूल्यों की स्थापना की है। उन्होंने अपनी रचनाओं में पारंपरिक नारीत्व के भावों जैसे सतीत्व, पत्नीत्व, मातृत्व का खयाल दिलाकर आत्मबोध भरा दिया। आधुनिक युग में शिक्षा, नौकरी और जीवन मूल्यों में आये बदलाव मानव जीवन में भी आये। स्त्री और पुरुष परम्परागत लीक से हटकर स्वतंत्र जीना पसन्द किया। समकालीन महिला लेखन स्त्री में अस्तित्व बोध जगाकर उसमें आत्मविश्वास और व्यक्तित्व प्रदान किया।

समकालीन महिला रचनाकारों द्वारा चित्रित सारे विषयों को चित्रा मुद्गल ने भी अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है। चित्राजी के उपन्यासों में समकालीन नारी के विभिन्न रूप देखने को मिलते है। उन्होंने युवा पीढ़ी की मानसिकता, मॉडलिंग तथा विज्ञापन के क्षेत्र से समाज में व्यापती नयी संस्कृति की ओर प्रकाश डाला है।

लक्ष्य

आधुनिक महिला साहित्यकार चित्रा मुद्गल के कथा–साहित्य में नारी के विभिन्न रूपों का चित्रण।

विज्ञापन की दुनिया में पिसती नारी

विज्ञापन की दुनिया में पिसती हुई स्त्री को भूख या घर की आर्थिक ज़रूरतें विज्ञापन की मंडी में ले जाती है। वहाँ पुरुष के हाथ से उसे नंगी होना पड़ता है, क्योंकि बाज़ार में नंगी या अधनंगी औरतें ज्यादा ऊँची कीमत पर बिकती है। यहाँ बाज़ार की बर्बरता और मर्द की बर्बरता एक है और औरत एक बिकाऊ चीज़ या माल होकर रह जाती है। इसी को आधार बनाकर चित्राजी ने अपने उपन्यास 'एक ज़मीन अपनी' की रचना की। लेकिन चित्रा मुद्गल ने यह समझदारी दिखाई है कि सभी पुरुषों को दरिंदा और तमाम औरतों को आदर्श की पुतली नहीं बनायी। उन्होंने बड़ी बारीकी से यह दिखाया कि यहाँ भी चुनाव है– कौन सी औरत बाज़ार या मंडी में दबाव के आगे झुकती है और कौन यहाँ भी अपनी लड़ाई और जंग ज़ारी रखती है। उपन्यास में स्त्री मुक्ति में कुछ बहुत साफ अर्थ निकलते दिखाई पड़ते हैं और चित्रा मुद्गल को स्त्री स्वतंत्रता को ऐसा भड़कीला, चालू और रसीला बनाने में रूचि नहीं थी कि उसे सहज सेक्स स्वतंत्रता या स्वछंद यौन–विचार में अवमूल्यित कर दिया हो, जैसा कि हम बहुत सी बड़बोली, क्रांतिकारी मुद्राओं वाली लेखिकाओं में देखते हैं। उनके लिए स्त्री स्वतंत्रता की बोल्डनेस सिर्फ मर्द बदलने या मर्द से दूसरे मर्द के पास तक चले जाने में है, जो स्त्री स्वातंत्र्य को महज देह में अवमूल्यित कर देता है कम से कम स्त्री को अपने स्वतंत्र जीवन को नए अर्थ ढूँढ़ निकलना चाहिए।

चित्राजी ने अपने नारी पात्र को आदर्श का मुखौटा नहीं पहनाया बल्कि उनके यथार्थ जीवन को हू–बहू चित्रित किया है। 'एक ज़मीन अपनी' और 'आवाँ' में नारी जीवन के जिन जिन क्षणों को हमारे सामने प्रस्तुत किया है, वह सब आधुनिक जीवन में विद्यमान है। इनमें नमिता, अंकिता, नीता, स्मिता, अंजना वासवानी जैसे पात्रों द्वारा सामाजिक जीवन में मीडिया, मॉडलिंग एवं फेमिनिज़्म आदि कई विषयों को प्रस्तुत किया गया है। नमिता और अंकिता द्वारा चित्राजी ने दो तरह के चरित्रों को प्रस्तुत किया है। नमिता आधुनिक सभ्यता की शिकार है तो अंकिता आदर्श नारी पात्र है। अंकिता अपनी अस्मिता बनाये रखते हुए विज्ञापन जगत की चकाचौंध से बची रही पर नीता ने अपना जीवन अपने कार्य क्षेत्र में ही होम कर दिया। जब उसने अपनी गलती का एहसास किया तब तक उसकी सारी ज़िन्दगी नष्ट हो चुकी थी। अंकिता स्वाभिमानी नारी है। वह पुरुष की गुलामी को सह नहीं पाती। वह नौकरी करके स्वतंत्र जीवन जीना चाहती है। नीता का चरित्र अंकिता से ठीक विपरीत है वह अपना जीवन मनमाने ढ़ंग से बिताना चाहती है। उसकी राय में जिन्दगी का मज़ा ऊसर बनाने से नहीं ऊर्वर बनाने में है। वह बिना शादी किये अनेक पुरुषों के साथ जीती है। आखिर अपनी गलती को समझकर आत्महत्या करती है तब भी अंकिता के अपने पैरों तले की ज़मीन पर दृढ़ रही। वह अच्छी तरह समझती है कि जीवन में आत्मनिर्भरता पाकर किसी के सामने सिर न झुकाते हुए जीवन जिया जा सकता है, पर वह आत्मबल के कारण औंधे मुँह गिरती नहीं विज्ञापन के क्षेत्र में काम करने पर भी वहाँ के जीवन, रंग और चकाचौंधी के प्रति अंकिता एक नकारात्मक दृष्टिकोण रखती है। वह प्रतिकूल अवस्था में भी प्रतिशोधात्मक भाव से संघर्ष करते हुए अस्मिता को बनाए रख सकी। यद्यपि अंकिता आधुनिक शिक्षित नारी है, पर उसे उसका अपना निर्णय तथा नैतिक मूल्यों के प्रति विश्वास है। नीता के पुरुष सम्बंधी विचार का विरोध करते हुए वह कहती है। "तुम्हारी स्त्री–समानता का दृष्टिकोण मर्द बनना है.... मर्दो की भांति रहना..... वे समत्व, आचार, व्यवहार, व्यवस्थाएँ अपनाना..... यही समानता का दृष्टिकोण है। स्त्री को समाज में समान अधिकारों के नाम पर इन्हीं उच्छृंखलताओं और अनुशासन हीनता ही चाह है? प्रश्न उठता है नीतू ..... ये अव्यवस्थाएँ हैं तो स्त्री के लिए उचित कैसे हो सकती हैं।"[2] समानता की चाह में आज स्त्री पुरुषों के साथ मिलजुलकर काम करती है, पर यह सबंध जब अनुशासनविहीन बन जाता है। तब स्थिति बदल जाती है। अंकिता ऐसी समानता को नहीं मानती। उसके मत में समाज ने जिन मूल्यों को निर्धारित किया है उसका पालन करते हुए स्वतंत्र जीवन जीना सही है। समाज में स्त्रियों की स्थिति बदलनी है। वह घर बाहर बहुत सारी समस्याओं को झेलती है। पर निरंकुशता से पुरुष के साथ मनमानी ढंग से जीना, बिना शादी करके पारिवारिक जीवन बिताना नारी मुक्ति या नारी स्वतंत्रता नहीं है। उनको भी अपनी ज़मीन होनी चाहिए। सुधांशु के साथ पारिवारिक जीवन की शुरूआत में अंकिता भी अपने स्त्रीत्व की पूर्ति चाहती थी। पर बाद में जब उसे महसूस हुआ कि सुधांशु ने उसके मन को, उसकी चाह को पहचानते हुए, उसकी 'स्व' को चिन्दी चिन्दी कर दिया। दोनों का एक साथ जीना दूभर हो गया, इसलिए परस्पर अलग होने का निर्णय लिया गया। बाद में जीवन के कई सदंर्भों में अंकिता अकेलापन को महसूस करती रही।

नारी मुक्ति के दो पक्षों का उद्घाटन

चित्रा मुद्गल ने अंकिता और नीता के माध्यम से नारी मुक्ति के दो पक्षों का उद्घाटन किया है। लेकिन उन्होंने नारी मुक्ति के भारतीय चिंतन को ही ज्यादा बल

दिया है। नारी की स्वतंत्रता उसके शरीर से नहीं मन से ही है।

नीता ने स्वतंत्र होकर जीना चाहा पर नहीं हो पायी। यही नहीं, उसे जिन्दगी को आधे रास्ते पर छोड़ना पड़ा। अंकिता अपने जीवन का एक–एक कदम सोच–समझकर रखा इसलिए वह अपना जीवन सुरक्षित रख सकी। अंकिता की उपलब्धि अंजुरी भर होते हुए भी उसकी अपनी है। वही उसका लक्ष्य था। पति से सम्बन्ध विच्छेद कर अंकिता स्त्रीत्व की पूर्णता के भ्रम से मुक्त हो लेती है। समाज के कुछ नियमों के प्रति उसका दृष्टिकोण नकारात्मक और प्रतिशोधात्मक नहीं, पर उसके अपने कुछ जीवन दर्शन हैं नीता और अंकिता अपने–अपने स्तर पर विचारणीय हैं। दोनों के चरित्र दो प्रतीक हैं जो नारी–मुक्ति की चेतना को विपरीत ध्रुवों को प्रस्तुत करते हैं उपन्यास में नीता आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती है उसका चरित्र सहज एवं अविस्मरणीय है।[3]

अंकिता सीधी–सादी पर विचारशील नारी है। नीता उच्चवर्ग की नारी है, उसमें आधुनिक सभ्यता के अनुकरण की प्रवृत्ति अधिक है। अंकिता संस्कार तथा मूल्य को महत्व देती है तो नीता अर्थ और प्रतिष्ठा को एक मॉडल के तौर पर अपनी जगह बनाना चाहती थी। कई पुरुषों से संबंध रखकर वह अपनी मंजिल तक पहुँची। लेकिन सुधीर जैसे शादीशुदा व्यक्ति से सम्बन्ध रखने से नीता का जीवन अन्धकार में डूब गया। सुधीर से मिली उपेक्षा ने उसमें पराजय बोध भर दिया और स्वयं को खत्म कर दिया लेकिन अपनी एकमात्र बेटी मानसी को अंकिता को सौंपकर उसने अपने विचारों की सार्थकता को महसूस किया।[4]

आवाँ में चित्रित नारियाँ

चित्राजी के दूसरे उपन्यास 'आवाँ' में नारी जीवन के कई संघर्षपूर्ण क्षण हैं। इसमें समाज सेविका, मज़दूर, निम्नवर्गीय नारी, मध्यवर्गीय नारी, उच्च्वर्गीय नारी, गलियों एवं झोंपडियों में रहती स्त्री, कम्पनियों में नौकरी करती स्त्री, वेश्या जीवन बिताती स्त्री आदि के चित्र हमें मिलते हैं। जीवन के हर स्तर के स्त्री जीवन का इसमें समावेश किया गया है। उपन्यास की पृष्ठभूमि श्रमिक राजनीति है। राजनीति और श्रमिक संगठनों का नेतृत्व पुरुषों का कार्य–क्षेत्र रहा था। लेकिन आज नारी सभी क्षेत्र में अपनी कार्य कुशलता दर्शाती हुई आगे बढ़ रही है। चित्रा मुद्गल का यह उपन्यास 'आवाँ' ऐसे एक मज़दूर संगठन के कार्यव्यवहार और उसके सदस्यों के जीवन में आई कुछ घटनाओं का चित्र है। श्रमिक राजनीति में आयी धोखाबाजी एवं और अवमूल्यन राजनैतिक नेताओं की गलत मानसिकता आदि को लेखिका ने उकेरा है इसमें पुरुष पात्रों से ज्यादा स्त्री पात्रों को प्रमुखता दी गयी है। इसमें चित्रित स्त्री पात्रों में समकालीन समाज की हर उम्र की स्त्री मानसिकता प्रस्तुत है।

मज़दूरों के अधिकारों के लिए लड़ती नारी

मज़दूरों के प्रति होनेवाले अनैतिक व्यवहारों, अनीतियों के विरोध करके अपनी आखिरी साँस तक मज़दूरों के नैतिक अधिकारों के लिए लड़ती समाज सेविका कामरेड कुसुमबाई का सही रूप है उपन्यास की किशोरी बाई। किशोरी बाई भी कुसुम बाई की तरह मज़दूरों की बुनियादी ज़रूरतों के लिए उनके साथ रही। किशोरी बाई शिक्षित नहीं थी। फिर भी संगठन की अन्य सदस्य विमला बेन, अन्ना साहब, शिंदे, पवार, आदि के साथ अपना विचार व्यक्त करती रही। किशोरी बाई का जीवन एक श्रमिक नारी के साथ–साथ निम्नवर्ग की नारी का पारिवारिक जीवन भी है। उसने श्रमिकों के प्रति ठेकेदारों और मिलमालिकों की अनैतिकता का प्रतिशोध किया। उसकी बेटी है सुनंदा। किशोरी बाई का जीवन अन्त तक संघर्ष पूर्ण रहा। फिर भी उसका चरित्र प्यार एवं ममता से युक्त संयमित रहा। इसलिए देवीशंकर पाण्डे से उनका संबंध जुड़ा उनका मन इतना संयमित एवं नियंत्रित था कि बेटी सुनन्दा की मृत्यु के सदंर्भ में ही उनका उसने नौकरी करके जीवन बिताया। गली में एक झोंपड़ी में वह बेटी के साथ रहती थी। मज़दूर संगठन' 'जागोरी' से जुड़े मज़दूर नारी वर्ग के अधिकारों के लिए आवाज़ उठाते रहे। सुनन्दा मुस्लिम धर्म के सुहैल से प्रेम करती थी। धार्मिक विरोधों के खिलाफ मनुष्य के साथ जीने की संकल्पना को लेकर उसने यह कार्य किया। लेकिन सुनंदा अपने जीवन में यह महसूस किया कि साम्प्रदायिक सम्भावना केवल संकल्प मात्र है, यथार्थ में लाना संभव नहीं है। सुनंदा और सुहैल परम्पर चाहते थे पर सुहैल सुनन्दा को मुस्लिम बनाना चाहता था। लेकिन सुनंदा हिन्दू होकर मुसलमान से शादी करना चाहती थी।[5] सुनन्दा और किशोरी बाई का जीवन निम्नवर्ग की झोंपड़ पट्टी की नारियों का है किशोरी बाई ने उपन्यास के केन्द्र पात्र नमिता पाण्डे को पिता से अनैतिक सम्बन्ध रखा। उसकी बेटी है। सुनन्दा। लेकिन किशोरी बाई ने यह सत्य छिपाकर रखा और अंत में जब सुनन्दा मारी गयी तब किशोरी बाई ने नमिता से पत्र द्वारा बेटी की मृत्यु देवीशंकर तक पहुँचाया है। निम्नवर्ग की स्त्रियों में ऐसे कुछ पात्र ज़रूर हैं। किशोरी बाई ने नमिता से इसलिए ममतापूर्ण व्यवहार किया कि वह देवी शंकर पाण्डे की बेटी है। सुनन्दा की हत्या में किशोरी बाई हतप्रभ हो गयी। आखिर उसकी बेटी को किसी को न देकर अकेले पालने का निश्चय किया। उसके जीवन में निरतंर संघर्ष चलते रहे। किशोरी बाई के चरित्र में विद्रोह, ममता, प्यार आदि भाव मिलजुले हैं। यद्यपि किशोरीबाई के चरित्र में खूबियाँ थीं फिर भी उसका पारिवारिक जीवन खुली पुस्तक के समान बिखरा हुआ था। लेकिन नमिता पाण्डे की माँ ऊर्मिला में जिन–जिन गुणों का अभाव था वे सब किशोरी बाई में थे। स्त्री शक्ति की अपार क्षमता और अत्याचार एवं अन्यायों के विरुद्ध आवाज़ उठाने की शक्ति भी उसमें थी। 'जागोरी' के सदस्यों के जीवन में आती तमाम समस्याओं को सुलझाने के लिए किशोरी बाई तैयार रही। जहाँ श्रमिक नारी मालिकों के अत्याचार के शिकार बन गयी तो वहाँ किशोरी बाई और बेटी सुनन्दा उसकी सेवा के लिए पहुँचती है। आखिर सुनंदा को अपने विश्वास के लिए जान देनी पड़ी। उसकी दाहसंस्कार के समय स्त्रियों की इतनी भीड़ हुई कि इससे पहले ऐसा नहीं हुआ। 'रामनाम' रटकर स्त्रियाँ शमशान तक गयीं। किशोरी बाई के जीवन में यह सबसे बड़ा परिक्षण था।

इस प्रकार चित्राजी ने किशोरी बाई और सुनन्दा के द्वारा दो विद्रोही नारियों को प्रस्तुत किया है।

उपरोक्त विश्लेषण करने के बाद हम पाते हैं कि महिला लेखन को महिलाओं का लेखन कहने के पीछे एक संजीदा जीवन–दृष्टि है, सामाजिक धरातल पर महिला और पुरुष में विभेदक दीवारे खड़ी करना जितना असंगत है, उतना ही असंगत है महिला लेखन की अलग पहचान का शिनाख्त न करना। चित्राजी की जीवन दृष्टि बहुत ही उदार एवं सामाजिक–रूढ़ियों को तोड़ने वाले हैं। अपने कथा कृतियों में चित्राजी ने स्त्री क्षमता को उसकी देह से उपर उठकर स्वीकार न करनेवाले रूढ़ रुग्ण समाज को बोध कराने के लक्ष्य को स्वीकारते हुए चित्राजी लगातार लेखन कार्य में कार्यरत हैं।

निष्कर्ष

आधुनिक हिन्दी साहित्य के कथा लेखिकाओं में चित्रा मुदगल की रचनायें दिल को छूती हुई प्रकट होती हैं। इस आलेख में चित्रा मुदगल की कहानियों एवं उपन्यासों में वर्णित सभी नारी चरित्रों को चित्रा जी ने बहुत ही ईमानदारी से उभारा है। नारी के सभी रूपों का चित्रण उन्होंने यथार्थवादी एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से किया हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सुची

1. डॉ० वेद प्रकाश अभिताय – हिन्दी उपन्यास की दिशाएँ
2. डॉ० ओमप्रकाश शर्मा – समकालीन महिला लेखन
3. साधना अग्रवाल – बर्ड़मान हिन्दी महिला लेखन और दाम्पत्य जीवन।
4. चित्रा मुदगल – एक जमीन अपनी
5. चित्रा मुदगल – आवाँ जमीन अपनी